रुद्राष्टकम् स्तोत्र

नमामी शमीशान निर्वाणरूपं
विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासंभजेऽहं ।। 1 ।।

निराकार ॐकारमूलं तुरीयं
गिराज्ञान गौतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसार पारं नतोऽहं ।। 2 ।।

षाराद्रिसंकाश गौरं गभीरं
मनोभूतकोटि प्रभाश्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनि चारुगंगा
लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।। 3 ।।

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।। 4 ।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।। 5 ।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदासद्चिदानन्द दाता पुरारि।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारि
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि ।। 6 ।।

नवावत् उमानाथपादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ।। 7 ।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदासर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जराजन्मदुःखौऽघतातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन् नमामीश शम्भो ।। 8 ।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये, ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

।। श्री रुद्राष्टकम् सम्पूर्णम् ।